॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता — पद पाठः

प्रथमकाण्डे अष्टमः प्रश्नः

राजसूयः

ॐ नमः परमात्मने । श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ॐ

अनुमत्या इत्यनु—मत्यै। पुरोडाशम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। धेनुः। दक्षिणा। ये। प्रत्यञ्चः। शम्यायाः। अवशीयन्त इत्यव—शीयन्ते। तम्। नैर्-ऋतमिति नैः—ऋतम्। एककपालमित्येक—कपालम्। कृष्णम्। वासः। कृष्णतूषमिति कृष्ण—तूषम्। दक्षिणा। वीति। इहि। स्वाहा। आहुतिमित्या—हुतिम्। जुषाणः। एषः। ते। निर्ऋत इति निः—ऋते। भागः। भूते। हविष्मती। असि। मुञ्च। इमम्। अꣳहसः। स्वाहा। नमः। यः। इदम्। चकार। आदित्यम्। चरुम्। निरिति। वपति। वरः। दक्षिणा। आग्नावैष्णवमित्याग्ना—वैष्णवम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। वामनः। वही। दक्षिणा। अग्नीषोमीयमित्यग्नी—सोमीयम्। १ (५०) ॥ [१] ॥ एकादशकपालमित्येका-दश—कपालम्। हिरण्यम्। दक्षिणा। ऐन्द्रम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। ऋषभः। वही। दक्षिणा। आग्नेयम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। ऐन्द्रम्। दधि। ऋषभः। वही। दक्षिणा। ऐन्द्राग्नमित्यैन्द्र—अग्नम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। वैश्व-देवमिति वैश्व—देवम्। चरुम्। प्रथमज इति प्रथम—जः। वथ्सः। दक्षिणा। सौम्यम्। श्यामाकम्। चरुम्। वासः। दक्षिणा। सरस्वत्यै। चरुम्। सरस्वते। चरुम्। मिथुनौ। गावौ। दक्षिणा ॥ [२] ॥

(अग्नीषोमीयंचतुस्त्रिꣳशच्च) ॥ १ ॥

आग्नेयम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। सौम्यम्। चरुम्। सावित्रम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। सारस्वतम्। चरुम्। पौष्णम्। चरुम्। मारुतम्। सप्त-कपालमिति सप्त—कपालम्। वैश्वदेवीमिति वैश्व—देवीम्। आमिक्षाम्। द्यावापृथिव्यमिति द्यावा—पृथिव्यम्। एककपालमित्येक—कपालम्॥ ३ (१८) (आग्नेयꣳ सौम्यं मारुत—मष्टा-दश) (आ२) ॥ [३] ॥

॥ २ ॥

ऐन्द्राग्नमित्यैन्द्र—अग्नम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। मारुतीम्। आमिक्षाम्। वारुणीम्। आमिक्षाम्। कायम्। एककपालमित्येक—कपालं। प्रघास्यानिति प्र—घास्यान्। हवामहे। मरुतः। यज्ञवाहस इति यज्ञ—वाहसः। करम्भेण। सजोषस इति स—जोषसः॥ मो इति। स्विति। नः। इन्द्र। पृथ्स्विति पृत्—सु। देव। अस्तु। स्म। ते। शुष्मिन्न्। अवया॥ मही। हि। अस्य। मीढुषः। यव्या॥ हविष्मतः। मरुतः। वन्दते। गीः॥ यत्। ग्रामे। यत्। अरण्ये। यत्। सभायाम्। यत्। इन्द्रिये॥ यत्। शूद्रे। यत्। अर्ये। एनः। चकृम। वयम्॥ यत्। एकस्य। अधीति। धर्मणि। तस्य। अवयजनमित्यव—यजनम्। असि। स्वाहा॥ अक्रन्न्। कर्म। कर्मकृत इति कर्म—कृतः। सह। वाचा। मयोभुवेति मयः—भुवा॥ देवेभ्यः। कर्म। कृत्वा। अस्तम्। प्रेति। इत। सुदानव इति सु—दानवः ॥ [४] ॥

(वयय्ँयद्विꣳशतिश्च) ॥ ३ ॥

अग्नये। अनीकवत इत्यनीक—वते। पुरोडाशम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। साकम्। सूर्येण। उद्यतेत्युत्—यता। मरुद्भ्य इति मरुत्—भ्यः। सान्त-पनेभ्य इति सां—तपनेभ्यः। मद्ध्यन्दिने। चरुम्। मरुद्भ्य इति मरुत्—भ्यः। गृहमेधिभ्य इति गृहमेधि—भ्यः। सर्वासाम्। दुग्धे। सायम्। चरुम्। पूर्णा। दर्वि। परेति। पत। सुपूर्णेति

सु—पूर्णा। पुनः। एति। पत॥ वस्ना। इव। वीति। क्रीणावहै। इषम्। ऊर्जम्। शतक्रतो इति शत—क्रतो॥ देहि। मे। ददामि। ते। नीति। मे। धेहि। नीति। ते। दधे॥ निहारमिति नि—हारम्। इत्। नीति। मे। हर। निहारमिति नि—हारम्। ५ (५०) ॥ [५] ॥

(हरा निहारंत्रिꣳशच्च) ॥ ४ ॥

नीति। हरामि। ते॥ मरुद्भ्य इति मरुत्—भ्यः। क्रीडिभ्य इति क्रीडि—भ्यः। पुरोडाशम्। सप्तकपालमिति सप्त—कपालम्। निरिति। वपति। साकम्। सूर्येण। उद्यतेत्युत्—यता। आग्नेयम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। सौम्यम्। चरुम्। सावित्रम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। सारस्वतम्। चरुम्। पौष्णम्। चरुम्। ऐन्द्राग्नमित्यैन्द्र—अग्नम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। ऐन्द्रम्। चरुम्। वैश्वकर्मणमिति वैश्व—कमर्णम्॥ एककपालमित्येक—कपालम्। ६(३०) सोमाय। पितृमत इति पितृ—मते। पुरोडाशम्। षट्कपालमिति षट्—कपालम्। निरिति। वपति। पितृभ्य इति पितृ—भ्यः। बर्हिषद्भ्य इति बर्हिषद्—भ्यः। धानाः। पितृभ्य इति पितृ—भ्यः। अग्निष्वात्तेभ्य इत्यग्नि—स्वात्तेभ्यः। अभिवान्याया इत्यभि—वान्यायै। दुग्धे। मन्थम्। एतत्। ते। तत। ये। च। त्वाम्। अन्विति। एतत्। ते। पितामह। प्रपितामहेति प्र—पितामह। ये। च। त्वाम्। अन्विति। अत्र। पितरः। यथाभागमिति यथा—भागम्। मन्दद्ध्वम्। सुसन्दृशमिति सु—सन्दृशम्। त्वा। वयम्। मघवन्निति मघ—वन्न्। मन्दिषीमहि॥ प्रेति। नूनम्। पूर्णवन्धुर इति पूर्ण—वन्धुरः। स्तुतः। यासि। वशान्। अनु॥ योजा। नु। इन्द्र। ते। हरी इति ॥ [६] ॥ अक्षन्न्। अमीमदन्त। हि। अवेति। प्रियाः। अधूषत॥ अस्तोषत। स्वभानव इति स्व—भानवः। विप्राः। नविष्ठया। मती॥ योजा। नु। इन्द्र। ते। हरी इति॥ अक्षन्न्। पितरः। अमीमदन्त। पितरः॥ अतीतृपन्त। पितरः। अमीमृजन्त। पितरः। परेति। इत। पितरः। सोम्याः। गंभीरैः। पथिभिरिति पथि—भिः। पूर्व्यैः॥ अथ। पितृन्। सुविदत्रानिति सु—विदत्रान्। अपीति। इत। यमेन। ये। सधमादमिति सध—मादम्। मदन्ति॥ मनः। नु। एति। हुवामहे। नाराशꣳसेन। स्तोमेन। पितृणाम्। च। मन्मभिरिति मन्म—भिः॥ एति। ८ (५०) ॥ [७] ॥ नः। एतु। मनः। पुनः।

क्रत्वे᳚। दक्षा॑य। जीवसे᳚॥ ज्योक्। च। सूर्य᳚म्। दृशे॥ पुन॑रिति॑। नः। पितर॑ः। मन॑ः। ददा॑तु। दैव्य॑ः। जन॑ः॥ जीवम्। व्रात᳚म्। सचेमहि॥ यत्। अन्तरि॑क्षम्। पृथिवीम्। उत। द्याम्। यत्। मातर᳚म्। पितर᳚म्। वा। जिहिꣳसिम॥ अग्निः। मा। तस्मा᳚त्। एन॑सः। गार्ह॑पत्य इति गार्ह—पत्यः। प्रेति॑। मुञ्चतु। दुरितेति॑ दुः—इता। यानि॑। चकृम। करोतु। माम्। अनेनस᳚म् ॥ [८] ॥

(हरीमन्मभिराचतुश्चत्वारिꣳशच्च) ॥ ५ ॥

प्रतिपूरुषमिति॑ प्रति—पूरुषम्। एक॑कपालानित्येक॑—कपालान्। निरिति॑। वपति। एक᳚म्। अति॑रिक्तमित्यति॑—रिक्तम्। याव॑न्तः। गृह्या᳚ः। स्मः। तेभ्य॑ः। कम्। अकरम्। पशूनाम्। शर्म॑। असि। शर्म॑। यज॑मानस्य। शर्म॑। मे। यच्छ। एक॑ः। एव। रुद्रः। न। द्वितीया॑य। तस्थे। आखुः। ते। रुद्र। पशुः। तम्। जुषस्व। एषः। ते। रुद्र। भागः। सह। स्वस्रा᳚। अंबि॑कया। तम्। जुषस्व। भेषजम्। गवे᳚। अश्वा॑य। पुरु॑षाय। भेषजम्। अथो इति॑। अस्मभ्यमित्यस्म—भ्यम्। भेषजम्। सुभे॑षजमिति सु—भेषजम्। १० (५०) ॥ [९] ॥ यथा᳚। अस॑ति॥ सुगमिति॑ सु—गम्। मेषाय॑। मेष्यै᳚। अवेति॑। अंब। रुद्रम्। अदिमहि। अवेति॑। देवम्। त्र्यंब॑कमिति त्रि—अंबकम्॥ यथा᳚। नः। श्रेय॑सः। कर॑त्। यथा᳚। नः। वस्य॑सः। कर॑त्। यथा᳚। नः। पशुमत इति॑ पशु—मत॑ः। कर॑त्। यथा᳚। नः। व्यवसाययादिति॑ वि—अवसायया॑त्॥ त्र्यंब॑कमिति त्रि—अंबकम्। यजामहे। सुगन्धिमिति॑ सु—गन्धिम्। पुष्टिवर्द्ध॑नमिति॑ पुष्टि—वर्द्ध॑नम्॥ उर्वारुकम्। इव। बन्ध॑नात्। मृत्योः। मुक्षीय। मा। अमृता᳚त्॥ एषः। ते। रुद्र। भागः। तम्। जुषस्व। तेन॑। अवसेन॑। परः। मूज॑वत इति मूज॑—वतः। अतीति॑। इहि। अव॑ततधन्वेत्यव॑तत—धन्वा। पिना॑कहस्त इति पिना॑क—हस्तः। कृत्ति॑वासा इति कृत्ति॑—वासाः ॥ [१०] ॥

(सुभे॑षजमिहि त्रीणि॑ च) ॥ ६ ॥

ऐन्द्राग्नमित्यैन्द्र᳚—अग्नम्। द्वाद॑शकपालमिति द्वाद॑श—कपालम्। वैश्वदेवमिति॑ वैश्व—देवम्। चरुम्। इन्द्रा॑य। शुनासीरा॑य। पुरोडाश᳚म्। द्वाद॑शकपालमिति द्वाद॑श—कपालम्।

वायव्यम्। पयः। सौर्यम्। एककपालमित्येक—कपालम्। द्वादशगवमिति द्वादश—गवम्। सीरम्। दक्षिणा। आग्नेयम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। रौद्रम्। गावीधुकम्। चरुम्। ऐन्द्रम्। दधि। वारुणम्। यवमयमिति यव—मयम्। चरुम्। वहिनी। धेनुः। दक्षिणा। ये। देवाः। पुरस्सद इति पुरः—सदः। अग्निनेत्रा इत्यग्नि—नेत्राः। दक्षिणसद इति दक्षिण—सदः। यमनेत्रा इति यम—नेत्राः। पश्चात्सद इति पश्चात्—सदः। सवितृनेत्रा इति सवितृ—नेत्राः। उत्तरसद इत्युत्तर—सदः। वरुणनेत्रा इति वरुण—नेत्राः। उपरिषद इत्युपरि—सदः। बृहस्पतिनेत्रा इति बृहस्पति—नेत्राः। रक्षोहण इति रक्षः—हनः। ते। नः। पान्तु। ते। नः। अवन्तु। तेभ्यः। १२ (५०) ॥ [११] ॥ नमः। तेभ्यः। स्वाहा। समूढमिति सं—ऊढम्। रक्षः। सन्दग्धमिति सं—दग्धम्। रक्षः। इदम्। अहम्। रक्षः। अभि। समिति। दहामि। अग्नये। रक्षोघ्न इति रक्षः—घ्ने। स्वाहा। यमाय। सवित्रे। वरुणाय। बृहस्पतये। दुवस्वते। रक्षोघ्न इति रक्षः—घ्ने। स्वाहा। प्रष्टिवाहीति प्रष्टि—वाही। रथः। दक्षिणा। देवस्य। त्वा। सवितुः। प्रसव इति प्र—सवे। अश्विनोः। बाहुभ्यामिति बाहु—भ्याम्। पूष्णः। हस्ताभ्याम्। रक्षसः। वधम्। जुहोमि। हतम्। रक्षः। अवधिष्म। रक्षः। यत्। वस्ते। तत्। दक्षिणा ॥ [१२] ॥

(तेभ्यःपञ्चचत्वारिंशच्च) ॥ ७ ॥

धात्रे। पुरोडाशम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। निरिति। वपति। अनुमत्या इत्यनु—मत्यै। चरुम्। राकायै। चरुम्। सिनीवाल्यै। चरुम्। कुह्वै। चरुम्। मिथुनौ। गावौ। दक्षिणा। आग्नावैष्णवमित्याग्ना—वैष्णवम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। निरिति। वपति। ऐन्द्रावैष्णवमित्यैन्द्रा—वैष्णवम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। वैष्णवम्। त्रिकपालमिति त्रि—कपालम्। वामनः। वही। दक्षिणा। अग्नीषोमीयमित्यग्नी—सोमीयम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। निरिति। वपति। इन्द्रासोमीयमितीन्द्रा—सोमीयम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। सौम्यम्। चरुम्। बभ्रुः। दक्षिणा। सोमापौष्णमिति सोमा—पौष्णम्। चरुम्। निरिति। वपति। ऐन्द्रापौष्णमित्यैन्द्रा—पौष्णम्।

चरुम्। पौष्णम्। चरुम्। श्यामः। दक्षिणा। वैश्वानरम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। निरिति। वपति। हिरण्यम्। दक्षिणा। वारुणम्। यवमयमिति यव—मयम्। चरुम्। अश्वः। दक्षिणा ॥ [१३] ॥

(वैश्वानरं द्वादशकपालं निरष्टौ च) ॥ ८ ॥

बार्हस्पत्यम्। चरुम्। निरिति। वपति। ब्रह्मणः। गृहे। शितिपृष्ठ इति शिति—पृष्ठः। दक्षिणा। ऐन्द्रम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। राजन्यस्य। गृहे। ऋषभः। दक्षिणा। आदित्यम्। चरुम्। महिष्यै। गृहे। धेनुः। दक्षिणा। नैरृतमिति नैः—ऋतम्। चरुम्। परिवृक्त्या इति परि—वृक्त्यै। गृहे। कृष्णानाम्। व्रीहीणाम्। नखनिर्भिन्नमिति नख—निर्भिन्नम्। कृष्णा। कूटा। दक्षिणा। आग्नेयम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। सेनान्य इति सेना—न्यः। गृहे। हिरण्यम्। दक्षिणा। वारुणम्। दशकपालमिति दश—कपालम्। सूतस्य। गृहे। महानिरष्ट इति महा—निरष्टः। दक्षिणा। मारुतम्। सप्तकपालमिति सप्त—कपालम्। ग्रामण्य इति ग्राम—न्यः। गृहे। पृश्निः। दक्षिणा। सावित्रम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। १५ (५०) ॥ [१४] ॥ क्षत्तुः। गृहे। उपध्वस्त इत्युप—ध्वस्तः। दक्षिणा। आश्विनम्। द्विकपालमिति द्वि—कपालम्। सङ्ग्रहीतुरिति सं—ग्रहीतुः। गृहे। सवात्याविति स—वात्यौ। दक्षिणा। पौष्णम्। चरुम्। भागदुघस्येति भाग—दुघस्य। गृहे। श्यामः। दक्षिणा। रौद्रम्। गावीधुकम्। चरुम्। अक्षावापस्येत्यक्ष—आवापस्य। गृहे। शबलः। उद्वार इत्युत्—वारः। दक्षिणा। इन्द्राय। सुत्राम्ण इति सु—त्राम्णे। पुरोडाशम्। एकादशक-पालमित्येकादश—कपालम्। प्रति। निरिति। वपति। इन्द्राय। अꣳहोमुच इत्यꣳहः—मुचे। अयम्। नः। राजा। वृत्रहेति वृत्र—हा। राजा। भूत्वा। वृत्रम्। वध्यात्। मैत्राबार्हस्पत्यमिति मैत्रा—बार्हस्पत्यम्। भवति। श्वेतायै। श्वेतवथ्साया इति श्वेत—वथ्सायै। दुग्धे। स्वयंमूर्त इति स्वयम्—मूर्ते। स्वयंमथित इति स्वयं—मथिते। आज्ये। आश्वत्थे। १६ (५०) ॥ [१५] ॥ पात्रे। चतुस्स्रक्ताविति चतुः—स्रक्तौ। स्वयमवपन्नाया इति स्वयं—अवपन्नायै। शाखायै। कर्णान्। च। अकर्णान्। च। तण्डुलान्। वीति। चिनुयात्। ये। कर्णाः। सः। पयसि। बार्ह-

स्पत्यः। ये। अकर्णाः। सः। आज्ये। मैत्रः। स्वयंकृतेति स्वयम्—कृता। वेदिः। भवति। स्वयन्दिनमिति स्वयं—दिनम्। बर्हिः। स्वयंकृत इति स्वयं—कृतः। इद्ध्मः। सा। एव। श्वेता। श्वेतवथ्सेति श्वेत—वथ्सा। दख्षिणा ॥ [१६] ॥

(सावित्रं द्वादशकपालमाश्वत्थे त्रयस्त्रिꣳशाच्च) ॥ ९ ॥

अग्नये। गृहपतय इति गृह—पतये। पुरोडाशम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। कृष्णानाम्। व्रीहीणाम्। सोमाय। वनस्पतये। श्यामाकम्। चरुम्। सवित्रे। सत्यप्रसवायेति सत्य—प्रसवाय। पुरोडाशम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। आशूनाम्। व्रीहीणाम्। रुद्राय। पशुपतय इति पशु—पतये। गावीधुकम्। चरुम्। बृहस्पतये। वाचः। पतये। नैवारम्। चरुम्। इन्द्राय। ज्येष्ठाय। पुरोडाशम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। महाव्रीहीणामिति महा—व्रीहीणाम्। मित्राय। सत्याय। आंबानाम्। चरुम्। वरुणाय। धर्मपतय इति धर्म—पतये। यवमयमिति यव—मयम्। चरुम्। सविता। त्वा। प्रसवानामिति प्र—सवानाम्। सुवताम्। अग्निः। गृहपतीनामिति गृह—पतीनाम्। सोमः। वनस्पतीनाम्। रुद्रः। पशूनाम्। १८ (५०) ॥ [१७] ॥ बृहस्पतिः। वाचाम्। इन्द्रः। ज्येष्ठानाम्। मित्रः। सत्यानाम्। वरुणः। धर्मपतीनामिति धर्म—पतीनाम्। ये। देवाः। देवसुव इति देव—सुवः। स्थ। ते। इमम्। आमुष्यायणम्। अनमित्राय। सुवद्ध्वम्। महते। ख्षत्राय। महते। आधिपत्यायेत्याधि—पत्याय। महते। जानराज्यायेति जान—राज्याय। एषः। वः। भरताः। राजा। सोमः। अस्माकम्। ब्राह्मणानाम्। राजा। प्रतीति। त्यत्। नाम। राज्यम्। अधायि। स्वाम्। तनुवम्। वरुणः। अशिश्रेत्। शुचेः। मित्रस्य। व्रत्याः। अभूम। अमन्महि। महतः। ऋतस्य। नाम। सर्वे। व्राताः। वरुणस्य। अभूवन्न्। वीति। मित्रः। एवैः। अरातिम्। अतारीत्। असूषुदन्त। यज्ञियाः। ऋतेन। वीति। उ। त्रितः। जरिमाणम्। नः। आनट्। विष्णोः। क्रमः। असि। विष्णोः। क्रान्तम्। असि। विष्णोः। विक्रान्तमिति वि—क्रान्तम्। असि ॥ [१८] ॥

(पशूनांव्राताःपञ्चविꣳशतिश्च) ॥ १० ॥

अर्थेत इत्यर्थ—इतः। स्थ। अपाम्। पतिः। असि। वृषा। असि। ऊर्मिः। वृषसेन इति वृष—सेनः। असि। व्रजक्षित इति व्रज—क्षितः। स्थ। मरुताम्। ओजः। स्थ। सूर्यवर्चस इति सूर्य—वर्चसः। स्थ। सूर्यत्वचस इति सूर्य—त्वचसः। स्थ। मान्दाः। स्थ। वाशाः। स्थ। शक्करीः। स्थ। विश्वभृत इति विश्व—भृतः। स्थ। जनभृत इति जन—भृतः। स्थ। अग्नेः। तेजस्याः। स्थ। अपाम्। ओषधीनाम्। रसः। स्थ। अपः। देवीः। मधुमतीरिति मधु—मतीः। अगृह्णन्। ऊर्जस्वतीः। राजसूयायेति राज—सूयाय। चितानाः॥ याभिः। मित्रावरु-णाविति मित्रा—वरुणौ। अभ्यषिञ्चन्नित्यभि—असिञ्चन्न्। याभिः। इन्द्रम्। अनयन्न्। अतीति। अरातीः॥ राष्ट्रदा इति राष्ट्र—दाः। स्थ। राष्ट्रम्। दत्त। स्वाहा। राष्ट्रदा इति राष्ट्र—दाः। स्थ। राष्ट्रम्। अमुष्मै। दत्त ॥ [१९] ॥

(अत्येकादश च) ॥ ११ ॥

देवीः। आपः। समिति। मधुमतीरिति मधु—मतीः। मधुमतीभिरिति मधु—मतीभिः। सृज्यद्ध्वम्। महि। वर्चः। क्षत्रियाय। वन्वानाः। अनाधृष्टा इत्यना—धृष्टाः। सीदत। ऊर्ज-स्वतीः। महि। वर्चः। क्षत्रियाय। दधतीः। अनिभृष्टमित्यनि—भृष्टम्। असि। वाचः। बन्धुः। तपोजा इति तपः—जाः। सोमस्य। दात्रम्। असि। शुक्राः। वः। शुक्रेण। उदिति। पुनामि। चन्द्राः। चन्द्रेण। अमृताः। अमृतेन। स्वाहा। राजसूयायेति राज—सूयाय। चितानाः॥ सध-माद इति सध—मादः। द्युम्निनीः। ऊर्जः। एताः। अनिभृष्टा इत्यनि—भृष्टाः। अपस्युवः। वसानः॥ पस्त्यासु। चक्रे। वरुणः। सधस्थमिति सध—स्थम्। अपाम्। शिशुः। २१ (५०) ॥ [२०] ॥ मातृतमास्विति मातृ—तमासु। अन्तः॥ क्षत्रस्य। उल्बम्। असि। क्षत्रस्य। योनिः। असि। आविन्नः। अग्निः। गृहपतिरिति गृह—पतिः। आविन्नः। इन्द्रः। वृद्धश्रवा इति वृद्ध—श्रवाः। आविन्नः। पूषा। विश्ववेदा इति विश्व—वेदाः। आविन्नौ। मित्रावरुणाविति मित्रा—वरुणौ। ऋतावृधावित्यृत—वृधौ। आविन्ने इति। द्यावापृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। धृतव्रते इति धृत—व्रते। आविन्ना। देवी। अदितिः। विश्वरूपीति विश्व—रूपी। आविन्नः। अयम्। असौ। आमुष्यायणः। अस्याम्। विशि। अस्मिन्न्। राष्ट्रे। महते। क्षत्राय। महते।

आधि॑पत्या॒येत्याधि॑—प॒त्या॒य॒। म॒ह॒ते। जान॑राज्या॒येति॒ जान॑—रा॒ज्या॒य॒। ए॒षः। व॒ः। भ॒र॒ताः।
राजा᳚। सोम॑ः। अ॒स्माक॑म्। ब्रा॒ह्म॒णाना᳚म्। राजा᳚। इन्द्र॑स्य। २२ (५०) ॥ [२१] ॥ वज्र॑ः।
अ॒सि॒। वा॒र्त्र॒घ्न इति॑ वा॒र्त्र॒—घ्नः॒। त्वया᳚। अ॒यम्। वृ॒त्रम्। व॒द्ध्या॒त्। श॒त्रु॒बाध॑ना॒ इति॑ श॒त्रु॒—
बाध॑नाः। स्थ॒। पा॒त। मा॒। प्र॒त्यञ्च᳚म्। पा॒त। मा॒। ति॒र्यञ्च᳚म्। अ॒न्वञ्च᳚म्। मा॒। पा॒त। दि॒ग्भ्य
इति॑ दि॒क्—भ्यः॒। मा॒। पा॒त। विश्वा᳚भ्यः। मा॒। ना॒ष्ट्राभ्य॑ः। पा॒त। हिर॑ण्यवर्णा॒विति॒ हिर॑ण्य—
व॒र्णौ॒। उ॒षसा᳚म्। वि॒रो॒क इति॑ वि—रो॒के। अय॑स्स्थूणा॒वित्यय॑ः—स्थू॒णौ॒। उदि॑ता॒वित्यु॒त्—इ॒तौ॒।
सूर्य॑स्य। एति॑। रो॒ह॒त॒म्। व॒रु॒ण॒। मि॒त्र॒। गर्त᳚म्। तत॑ः। च॒ख्षा॒था॒म्। अदि॑तिम्। दिति᳚म्।
च॒ ॥ [२२] ॥

(शि॒शु॒रिन्द्र॒स्यैक॑चत्वारिꣳशच्च) ॥ १२ ॥

स॒मिध॒मिति॑ सं—इध᳚म्। एति॑। ति॒ष्ठ॒। गा॒य॒त्री। त्वा॒। छन्द॑साम्। अ॒व॒तु॒। त्रि॒वृदिति॑ त्रि—
वृ॒त्। स्तोम॑ः। र॒थ॒न्त॒रमिति॑ रथं—त॒र॒म्। साम॑। अ॒ग्निः। दे॒वता᳚। ब्रह्म॑। द्रवि॑णम्। उ॒ग्राम्।
एति॑। ति॒ष्ठ॒। त्रि॒ष्टुप्। त्वा॒। छन्द॑साम्। अ॒व॒तु॒। प॒ञ्च॒द॒श इति॑ प॒ञ्च॒—द॒शः। स्तोम॑ः। बृ॒ह॒त्।
साम॑। इन्द्र॑ः। दे॒वता᳚। ख्ष॒त्रम्। द्रवि॑णम्। वि॒रा॒ज॒मिति॑ वि—राज᳚म्। एति॑। ति॒ष्ठ॒। जग॑ती।
त्वा॒। छन्द॑साम्। अ॒व॒तु॒। स॒प्त॒द॒श इति॑ स॒प्त॒—द॒शः। स्तोम॑ः। वै॒रू॒पम्। साम॑। म॒रुत॑ः। दे॒वता᳚।
वि॒ट्। द्रवि॑णम्। उदी॑चीम्। एति॑। ति॒ष्ठ॒। अ॒नु॒ष्टुबित्य॑नु—स्तु॒प्। त्वा॒। २४ (५०) ॥ [२३] ॥
छन्द॑साम्। अ॒व॒तु॒। ए॒क॒वि॒ꣳ॒श इत्येक॑—वि॒ꣳ॒शः। स्तोम॑ः। वै॒राज॒म्। साम॑। मि॒त्रावरु॑णा॒विति॑
मि॒त्रा—वरु॑णौ। दे॒वता᳚। बल᳚म्। द्रवि॑णम्। ऊ॒द्ध्वाम्। एति॑। ति॒ष्ठ॒। प॒ङ्क्तिः। त्वा॒। छन्द॑साम्।
अ॒व॒तु॒। त्रि॒ण॒व॒त्र॒य॒स्त्रि॒ꣳ॒शा॒विति॑ त्रि॒ण॒व—त्र॒य॒स्त्रि॒ꣳ॒शौ। स्तोमौ᳚। शा॒क्व॒र॒रै॒व॒ते इति॑ शा॒क्व॒र—
रै॒व॒ते। साम॑नी॒ इति॑। बृह॒स्पति॑ः। दे॒वता᳚। वर्च॑ः। द्रवि॑णम्। ई॒दृङ्। च॒। अ॒न्या॒दृङ्। च॒।
ए॒ता॒दृङ्। च॒। प्र॒ति॒दृङ्ङिति॑ प्रति॒—दृङ्। च॒। मि॒तः। च॒। संमि॑त॒ इति॒ सं—मि॒तः। च॒। सभ॑रा॒
इति॒ स—भ॒राः॥ शु॒क्रज्यो॑तिरिति॑ शु॒क्र—ज्यो॒तिः॒। च॒। चि॒त्रज्यो॑तिरिति॑ चि॒त्र—ज्यो॒तिः॒। च॒।
स॒त्यज्यो॑तिरिति॑ स॒त्य—ज्यो॒तिः॒। च॒। ज्योति॑ष्मान्। च॒। स॒त्यः। च॒। ऋ॒त॒पा इत्यृ॑त—पाः।
च॒। २५ (५०) ॥ [२४] ॥ अत्य॑ꣳहा॒ इत्यति॑—अ॒ꣳ॒हाः॥ अ॒ग्नये᳚। स्वाहा᳚। सोमा॑य। स्वाहा᳚।

सवित्रे। स्वाहा। सरस्वत्यै। स्वाहा। पूष्णे। स्वाहा। बृहस्पतये। स्वाहा। इन्द्राय। स्वाहा। घोषाय। स्वाहा। श्लोकाय। स्वाहा। अꣳशाय। स्वाहा। भगाय। स्वाहा। ख्षेत्रस्य। पतये। स्वाहा। पृथिव्यै। स्वाहा। अन्तरिख्षाय। स्वाहा। दिवे। स्वाहा। सूर्याय। स्वाहा। चन्द्रमसे। स्वाहा। नख्षत्रेभ्यः। स्वाहा। अद्भ्य इत्यत्—भ्यः। स्वाहा। ओषधीभ्य इत्योषधि—भ्यः। स्वाहा। वनस्पतिभ्य इति वनस्पति—भ्यः। स्वाहा। चराचरेभ्यः। स्वाहा। परिप्लवेभ्य इति परि—प्लवेभ्यः। स्वाहा। सरीसृपेभ्यः। स्वाहा ॥ [२५] ॥

(अनुष्टुप्त्वर्तपाश्च सरीसृपेभ्यः स्वाहा) ॥ १३ ॥

सोमस्य। त्विषिः। असि। तव। इव। मे। त्विषिः। भूयात्। अमृतम्। असि। मृत्योः। मा। पाहि। दिद्योत्। मा। पाहि। अवेष्टा इत्यव—इष्टाः। दन्दशूकाः। निरस्तमिति निः—अस्तम्। नमुचेः। शिरः॥ सोमः। राजा। वरुणः। देवाः। धर्मसुव इति धर्म—सुवः। च। ये॥ ते। ते। वाचम्। सुवन्ताम्। ते। ते। प्राणमिति प्र—अनम्। सुवन्ताम्। ते। ते। चख्षुः। सुवन्ताम्। ते। ते। श्रोत्रम्। सुवन्ताम्। सोमस्य। त्वा। द्युम्नेन। अभीति। सिञ्चामि। अग्नेः। २७ (५०) ॥ [२६] ॥ तेजसा। सूर्यस्य। वर्चसा। इन्द्रस्य। इन्द्रियेण। मित्रावरुणयोरिति मित्रा—वरुणयोः। वीर्येण। मरुताम्। ओजसा। ख्षत्राणाम्। ख्षत्रपतिरिति ख्षत्र—पतिः। असि। अतीति। दिवः। पाहि। समाववृत्रन्निति सं—आववृत्रन्। अधराक्। उदीचीः। अहिम्। बुद्धियम्। अन्विति। सञ्चरन्तीरिति सं—चरन्तीः। ताः। पर्वतस्य। वृषभस्य। पृष्ठे। नावः। चरन्ति। स्वसिच इति स्व—सिचः। इयानाः॥ रुद्र। यत्। ते। क्रयि। परम्। नाम। तस्मै। हुतम्। असि। यमेष्टमिति यम—इष्टम्। असि॥ प्रजापत इति प्रजा—पते। न। त्वत्। एतानि। अन्यः। विश्वा। जातानि। परीति। ता। बभूव॥ यत्कामा इति यत्—कामाः। ते। जुहुमः। तत्। नः। अस्तु। वयम्। स्याम। पतयः। रयीणाम् ॥ [२७] ॥

(अग्नेस्तैकादश च) ॥ १४ ॥

इन्द्रस्य। वज्रः। असि। वार्त्रघ्न इति वार्त्र—घ्नः। त्वया। अयम्। वृत्रम्। वद्ध्यात्। मित्राव-रुणयोरिति मित्रा—वरुणयोः। त्वा। प्रशास्त्रोरिति प्र—शास्त्रोः। प्रशिषेति प्र—शिषा। युनज्मि। यज्ञस्य। योगेन। विष्णोः। क्रमः। असि। विष्णोः। क्रान्तम्। असि। विष्णोः। विक्रान्त-मिति वि—क्रान्तम्। असि। मरुताम्। प्रसव इति प्र—सवे। जेषम्। आप्तम्। मनः। समिति। अहम्। इन्द्रियेण। वीर्येण। पशूनाम्। मन्युः। असि। तव। इव। मे। मन्युः। भूयात्। नमः। मात्रे। पृथिव्यै। मा। अहम्। मातरम्। पृथिवीम्। हिꣳसिषम्। मा। २९ (५०) ॥ [२८] ॥
माम्। माता। पृथिवी। हिꣳसीत्। इयत्। असि। आयुः। असि। आयुः। मे। धेहि। ऊर्क्। असि। ऊर्जम्। मे। धेहि। युङ्। असि। वर्चः। असि। वर्चः। मयि। धेहि। अग्नये। गृह-पतय इति गृह—पतये। स्वाहा। सोमाय। वनस्पतये। स्वाहा। इन्द्रस्य। बलाय। स्वाहा। मरुताम्। ओजसे। स्वाहा। हꣳसः। शुचिषदिति शुचि—सत्। वसुः। अन्तरिख्षसदित्य-न्तरिख्ष—सत्। होता। वेदिषदिति वेदि—सत्। अतिथिः। दुरोणसदिति दुरोण—सत्॥ नृष-दिति नृ—सत्। वरसदिति वर—सत्। ऋतसदित्यृत—सत्। व्योमसदिति व्योम—सत्। अब्जा इत्यप्—जाः। गोजा इति गो—जाः। ऋतजा इत्यृत—जाः। अद्रिजा इत्यद्रि—जाः। ऋतं। बृहत् ॥ [२९] ॥

(हिꣳसिषं मर्तजास्त्रीणि च) ॥ १५ ॥

मित्रः। असि। वरुणः। असि। समिति। अहम्। विश्वैः। देवैः। ख्षत्रस्य। नाभिः। असि। ख्षत्रस्य। योनिः। असि। स्योनाम्। एति। सीद। सुषदामिति सु—सदाम्। एति। सीद। मा। त्वा। हिꣳसीत्। मा। मा। हिꣳसीत्। नीति। ससाद। धृतव्रत इति धृत—व्रतः। वरुणः। पस्त्यासु। एति। साम्राज्यायेति सां—राज्याय। सुक्रतुरिति सु—क्रतुः। ब्रह्मा(३)न्। त्वम्। राजन्न्। ब्रह्मा। असि। सविता। असि। सत्यसव इति सत्य—सवः। ब्रह्मा(३)न्। त्वम्। राजन्न्। ब्रह्मा। असि। इन्द्रः। असि। सत्यौजा इति सत्य—ओजाः। ३१ (५०) ॥ [३०] ॥

(४०) (सत्यौजाश्चत्वारिꣳशच्च) ॥ १६ ॥

ब्रह्मा(३)न्। त्वम्। राजन्न्। ब्रह्मा। असि। मित्रः। असि। सुशेव इति सु—शेवः। ब्रह्मा(३)न्। त्वम्। राजन्न्। ब्रह्मा। असि। वरुणः। असि। सत्यधर्मेति सत्य—धर्मा। इन्द्रस्य। वज्रः। असि। वार्त्रघ्न इति वार्त्र—घ्नः। तेन। मे। रध्य। दिशः। अभीति। अयम्। राजा। अभूत्। सुश्लोका(४) इँति सु—श्लोका(४)। सुँमङ्गला(४) इँति सु—मङ्गला(४)। सँत्यराजा(३)निति सत्य—राजा(३)न्॥ अपाम्। नप्त्रे। स्वाहा। ऊर्जः। नप्त्रे। स्वाहा। अग्नये। गृहपतय इति गृह—पतये। स्वाहा॥ ३२ आग्नेयम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। हिरण्यम्। दक्षिणा। सारस्वतम्। चरुम्। वथ्सतरी। दक्षिणा। सावित्रम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। उपद्ध्वस्त इत्युप—ध्वस्तः। दक्षिणा। पौष्णम्। चरुम्। श्यामः। दक्षिणा। बार्हस्पत्यम्। चरुम्। शितिपृष्ठ इति शिति—पृष्ठः। दक्षिणा। ऐन्द्रम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। ऋषभः। दक्षिणा। वारुणम्। दशकपाल-मिति दश—कपालम्। महानिरष्ट इति महा—निरष्टः। दक्षिणा। सौम्यम्। चरुम्। बभ्रुः। दक्षिणा। त्वाष्ट्रम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। शुण्ठः। दक्षिणा। वैष्णवम्। त्रिकपा-लमिति त्रि—कपालम्। वामनः। दक्षिणा ॥ [३१] ॥

(आग्नेयꣳ हिरण्यꣳ सारस्वतंद्विचत्वारिꣳशत्) ॥ १७ ॥

सद्यः। दीक्षयन्ति। सद्यः। सोमम्। क्रीणन्ति। पुण्डरिस्रजाम्। प्रेति। यच्छति। दशभि-रिति दश—भिः। वथ्सतरैः। सोमम्। क्रीणाति। दशपेय इति दश—पेयः। भवति। शतम्। ब्राह्मणाः। पिबन्ति। सप्तदशमिति सप्त—दशम्। स्तोत्रम्। भवति। प्राकाशौ। अद्ध्वर्यवे। ददाति। स्रजम्। उद्गात्र इत्युत्—गात्रे। रुक्मम्। होत्रे। अश्वम्। प्रस्तोतृप्रतिहर्तृभ्यामिति प्रस्तोतृप्रतिहर्तृ—भ्यां। द्वादश। पष्ठौहीः। ब्रह्मणे। वशाम्। मैत्रावरुणायेति मैत्रा—वरुणाय। ऋषभम्। ब्राह्मणाच्छꣳसिने। वाससी इति। नेष्टापोतृभ्यामिति नेष्टापोतृ—भ्याम्। स्थूरि। यवा-चितमिति यव—आचितम्। अच्छावाकाय। अनड्वाहम्। अग्नीध इत्यग्नि—इधे। भार्गवः। होता। भवति। श्रायन्तीयम्। ब्रह्मसाममिति ब्रह्म—सामम्। भवति। वारवन्तीयमिति वार—वन्तीयम्। अग्निष्टोमसाममित्यग्निष्टोम—सामम्। सारस्वतीः। अपः। गृह्णाति ॥ [३२] ॥

(वारवन्तीयं चत्वारि च) ॥ १८ ॥

आग्नेयम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। हिरण्यम्। दक्षिणा। ऐन्द्रम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। ऋषभः। दक्षिणा। वैश्वदेवमिति वैश्व—देवम्। चरुम्। पिशङ्गी। पष्ठौही। दक्षिणा। मैत्रावरुणीमिति मैत्रा—वरुणीम्। आमिक्षाम्। वशा। दक्षिणा। बार्हस्पत्यम्। चरुम्। शितिपृष्ठ इति शिति—पृष्ठः। दक्षिणा। आदित्याम्। मल्हाम्। गर्भिणीम्। एति। लभते। मारुतीम्। पृश्निम्। पष्ठौहीम्। अश्विभ्यामित्यश्वि—भ्याम्। पूष्णे। पुरोडाशम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। निरिति। वपति। सरस्वते। सत्यवाच इति सत्य—वाचे। चरुम्। सवित्रे। सत्यप्रसवायेति सत्य—प्रसवाय। पुरोडाशम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। तिसृधन्वमिति तिसृ—धन्वम्। शुष्कदृतिरिति शुष्क—दृतिः। दक्षिणा ॥ [३३] ॥

(अग्नेयꣳ हिरण्यमैन्द्रमृषभो वैश्वदेवं पिशङ्गी बार्हस्पत्यꣳसप्तचत्वारिꣳशत्) ॥ १९ ॥

आग्नेयम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। निरिति। वपति। सौम्यम्। चरुम्। सावित्रम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। बार्हस्पत्यम्। चरुम्। त्वाष्ट्रम्। अष्टाकपालमित्यष्टा—कपालम्। वैश्वानरम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। दक्षिणः। रथवाहनवाह इति रथवाहन—वाहः। दक्षिणा। सारस्वतम्। चरुम्। निरिति। वपति। पौष्णम्। चरुम्। मैत्रम्। चरुम्। वारुणम्। चरुम्। क्षैत्रपत्यमिति क्षैत्र—पत्यम्। चरुम्। आदित्यम्। चरुम्। उत्तर इत्युत्—तरः। रथवाहनवाह इति रथवाहन—वाहः। दक्षिणा ॥ [३४] ॥

(आग्नेयꣳ सौम्यं बार्हस्पत्यंचतुस्त्रिꣳशत्) ॥ २० ॥

स्वाद्वीम्। त्वा। स्वादुना। तीव्राम्। तीव्रेण। अमृताम्। अमृतेन। सृजामि। समिति। सोमेन। सोमः। असि। अश्विभ्यामित्यश्वि—भ्याम्। पच्यस्व। सरस्वत्यै। पच्यस्व। इन्द्राय।

सुत्रांण इति सु—त्रांणे। पच्यस्व। पुनातु। ते। परिस्रुतमिति परि—स्रुतम्। सोमम्। सूर्यस्य। दुहिता॥ वारेण। शश्वता। तना॥ वायुः। पूतः। पवित्रेण। प्रत्यङ्। सोमः। अतिद्रुत इत्यति—द्रुतः॥ इन्द्रस्य। युज्यः। सखा॥ कुवित्। अङ्ग। यवमन्त इति यव—मन्तः। यवम्। चित्। यथा। दान्ति। अनुपूर्वमित्यनु—पूर्वम्। वियूयेति वि—यूय॥ इहेहेतीह—इह। एषाम्। कृणुत। भोजनानि। ये। बर्हिषः। नमोवृक्तिमिति नमः—वृक्तिम्। न। जग्मुः॥ आश्विनम्। धूम्रम्। एति। लभते। सारस्वतम्। मेषम्। ऐन्द्रम्। ऋषभम्। ऐन्द्रम्। एकादशकपालमित्येकादश—कपालम्। निरिति। वपति। सावित्रम्। द्वादशकपालमिति द्वादश—कपालम्। वारुणम्। दश-कपालमिति दश—कपालम्। सोमप्रतीका इति सोम—प्रतीकाः। पितरः। तृप्णुत। वडबा। दक्षिणा ॥ [३५] ॥

(भोजनानिषड्विंशतिश्च) ॥ २१ ॥

अग्नाविष्णू इत्यग्ना—विष्णू। महि। तत्। वाम्। महित्वमिति महि—त्वम्। वीतम्। घृतस्य। गुह्यानि। नाम॥ दमेदम इति दमे—दमे। सप्त। रत्ना। दधाना। प्रतीति। वाम्। जिह्वा। घृतम्। एति। चरण्येत्॥ अग्नाविष्णू इत्यग्ना—विष्णू। महि। धाम। प्रियम्। वाम्। वीथः। घृतस्य। गुह्या। जुषाणा॥ दमेदम इति दमे—दमे। सुष्टुतीरिति सु—स्तुतीः। वावृधाना। प्रतीति। वाम्। जिह्वा। घृतम्। उदिति। चरण्येत्॥ प्रेति। नः। देवी। सरस्वती। वाजेभिः। वाजिनीवतीति वाजिनी—वती॥ धीनाम्। अवित्री। अवतु॥ एति। नः। दिवः। बृहतः। ३८ (५०) ॥ [३६] ॥ पर्वतात्। एति। सरस्वती। यजता। गन्तु। यज्ञम्॥ हवम्। देवी। जुजुषाणा। घृताची। शग्माम्। नः। वाचम्। उशती। शृणोतु॥ बृहस्पते। जुषस्व। नः। हव्यानि। विश्वदेव्येति विश्व—देव्य॥ रास्व। रत्नानि। दाशुषे॥ एवा। पित्रे। विश्वदेवायेति विश्व—देवाय। वृष्णे। यज्ञैः। विधेम। नमसा। हविर्भिरिति हविः—भिः॥ बृहस्पते। सुप्रजा इति सु—प्रजाः। वीरवन्त इति वीर—वन्तः। वयम्। स्याम। पतयः। रयीणाम्॥ बृहस्पते। अतीति। यत्। अर्यः। अर्हात्। द्युमदिति द्यु—मत्। विभातीति वि—भाति। क्रतुमदिति क्रतु—मत्। जनेषु॥ यत्। दीदयत्। शवसा। ३९ (५०) ॥ [३७] ॥ ऋतप्रजातेत्यृत—प्रजात।

तत्। अस्मासु। द्रविणम्। धेहि। चित्रम्॥ एति। नः। मित्रावरुणेति मित्रा—वरुणा। घृतैः। गव्यूतिम्। उख्षतम्॥ मद्ध्वा। रजाꣳसि। सुक्रतू इति सु—क्रतू॥ प्रेति। बाहवा। सिसृतम्। जीवसे। नः। एति। नः। गव्यूतिम्। उख्षतम्। घृतेन॥ एति। नः। जने। श्रवयतम्। युवाना। श्रुतम्। मे। मित्रावरुणेति मित्रा—वरुणा। हवा। इमा॥ अग्निम्। वः। पूर्व्यम्। गिरा। देवम्। ईडे। वसूनाम्॥ सपर्यन्तः। पुरुप्रियमिति पुरु—प्रियम्। मित्रम्। न। ख्षेत्रसाधस-मिति ख्षेत्र—साधसम्॥ मख्षु। देववत इति देव—वतः। रथः। ४० (५०) ॥ [३८] ॥

शूरः। वा। पृथ्स्विति पृत्—सु। कासु। चित्॥ देवानाम्। यः। इत्। मनः। यजमानः। इयख्षति। अभीति। इत्। अयज्वनः। भुवत्॥ न। यजमान। रिष्यसि। न। सुन्वान। न। देवयो इति देव—यो॥ असत्। अत्र। सुवीर्यमिति सु—वीर्यम्। उत। त्यत्। आश्वश्वियमि-त्याशु—अश्वियम्॥ नकिः। तम्। कर्मणा। नशत्। न। प्रेति। योषत्। न। योषति॥ उपेति। ख्षरन्ति। सिन्धवः। मयोभुव इति मयः—भुवः। ईजानम्। च। यख्ष्यमाणम्। च। धेनवः॥ पृणन्तम्। च। पपुरिम्। च। ४१ (५०) ॥ [३९] ॥

श्रवस्यवः। घृतस्य। धाराः। उपेति। यन्ति। विश्वतः॥ सोमारुद्रेति सोमा—रुद्रा। वीति। वृहतम्। विषूचीम्। अमीवा। या। नः। गयम्। आविवेशेत्या—विवेश॥ आरे। बाधेथाम्। निर्ऋतिमिति निः—ऋतिम्। पराचैः। कृतम्। चित्। एनः। प्रेति। मुमुक्तम्। अस्मत्॥ सोमारुद्रेति सोमा—रुद्रा। युवम्। एतानि। अस्मे इति। विश्वा। तनूषु। भेषजानि। धत्तम्। अवेति। स्यतम्। मुञ्चतम्। यत्। नः। अस्ति। तनूषु। बद्धम्। कृतम्। एनः। अस्मत्। सोमापूषणेति सोमा—पूषणा। जनना। रयीणाम्। जनना। दिवः। जनना। पृथिव्याः॥ जातौ। विश्वस्य। भुवनस्य। गोपौ। देवाः। अकृण्वन्न्। अमृतस्य। नाभिम्॥ इमौ। देवौ। जायमानौ। जुषन्त। इमौ। तमाꣳसि। गूहताम्। अजुष्टा॥ आभ्याम्। इन्द्रः। पक्कम्। आमासु। अन्तः। सोमापूषभ्यामिति सोमापूष—भ्याम्। जनत्। उस्रियासु ॥ [४०] ॥

(बृहतःशर्वसारथःपपुरिं चदिवो जननापञ्चविꣳशतिश्च) ॥ २२ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

प्रथमकाण्डे अष्टमः प्रश्नः — पद पाठः — समाप्तः

अनुवाकाः	पञ्चशत्यः
२२	४०

ॐ